

**Time Allowed :3 Hours 15 Minutes | Maximum Marks :70 | Total Questions :30**

### General Instructions

**Read the following instructions very carefully and strictly follow them:**

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए नियत किए गए हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों - खण्ड अ तथा खण्ड ब में विभाजित है।
3. इस प्रश्न-पत्र के खण्ड अ में 20 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, जिसमें दिए गए चार विकल्पों में से सही विकल्प का चयन करके ओ.एम.आर. शीट पर लिखें। उत्तर-पत्रक पर नीली अथवा काले बाल प्वाइंट पेन से सही विकल्प वाले गोले को अच्छी तरह काला कर दें।
4. खण्ड अ के बहुविकल्पीय प्रश्नों हेतु प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है। बहुविकल्पीय प्रश्नों हेतु नकारात्मक अंकन की व्यवस्था नहीं है। अतः सभी प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कीजिए। ओ.एम.आर. शीट पर उत्तर देने के पश्चात संबंधित गोले को काटें नहीं तथा इरेज़र एवं व्हाइटनर का प्रयोग न करें।
5. प्रत्येक प्रश्न के सम्मुख उनके निर्धारित अंक दिए गए हैं।
6. खण्ड ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। इसके लिए कुल 50 अंक निर्धारित हैं।
7. खण्ड ब के प्रश्नों के उत्तर यथासंभव क्रमवार लिखने का प्रयास कीजिए। जो प्रश्न न आता हो उस पर समय नष्ट मत कीजिए।

### Section - A

1. 'चन्द्रगुप्त' रचना की विधा है :

- (A) निबन्ध
- (B) उपन्यास
- (C) नाटक
- (D) कविता

**Correct Answer:** (C) नाटक

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में पूछा गया है कि 'चन्द्रगुप्त' नामक रचना किस साहित्यिक विधा के अंतर्गत आती है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

'चन्द्रगुप्त' हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक ऐतिहासिक नाटक है। यह नाटक मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन और उनके उत्थान पर आधारित है। जयशंकर प्रसाद छायावाद युग के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं और उन्होंने कई प्रसिद्ध नाटकों की रचना की, जैसे 'स्कन्दगुप्त', 'अजातशत्रु', और 'ध्रुवस्वामिनी'।  
अतः, सही विकल्प (C) है।

**Quick Tip**

जयशंकर प्रसाद के प्रमुख नाटकों (जैसे - चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी) और उनकी विधा को याद रखें। अक्सर परीक्षाओं में लेखक और उनकी रचना की विधा से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।

**2. 'दीप जले शंख बजे' के लेखक हैं :**

- (A) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
- (B) शान्तिप्रिय द्विवेदी
- (C) रामवृक्ष 'बेनीपुरी'
- (D) देवेन्द्र सत्यार्थी

**Correct Answer:** (A) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

**Solution:****Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में 'दीप जले शंख बजे' नामक रचना के लेखक का नाम पूछा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

'दीप जले शंख बजे' एक प्रसिद्ध संस्मरण और रिपोर्टाज संग्रह है, जिसके लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं।

प्रभाकर जी हिंदी साहित्य के एक जाने-माने निबंधकार, संस्मरण लेखक और पत्रकार थे। उनकी अन्य प्रमुख रचनाओं में 'बाजे पायलिया के घुँघरू', 'माटी हो गई सोना' आदि शामिल हैं। इसलिए, सही उत्तर विकल्प (A) है।

**Quick Tip**

प्रमुख गद्य लेखकों और उनकी महत्वपूर्ण कृतियों की एक सूची बनाकर याद करना परीक्षा के लिए बहुत उपयोगी होता है। विशेष रूप से संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्टाज विधा की रचनाएँ अक्सर पूछी जाती हैं।

---

### 3. शुक्लोत्तर युगीन लेखक हैं :

- (A) विनय मोहन शर्मा
- (B) मन्नू भण्डारी
- (C) उपेन्द्रनाथ 'अशक'
- (D) सत्येन्द्र द्विवेदी

**Correct Answer:** (A) विनय मोहन शर्मा

**Solution:**

#### Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से शुक्लोत्तर युग (आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद का समय) के लेखक की पहचान करनी है।

#### Step 2: Detailed Explanation:

हिंदी गद्य साहित्य में, शुक्लोत्तर युग का समय लगभग 1938 ई. के बाद का माना जाता है।

- विनय मोहन शर्मा एक प्रमुख आलोचक और निबंधकार हैं, जिन्हें शुक्लोत्तर युग के महत्वपूर्ण लेखकों में गिना जाता है।

- उपेन्द्रनाथ 'अशक' भी इसी दौर के लेखक हैं, लेकिन विनय मोहन शर्मा को आलोचना के क्षेत्र में इस युग का एक प्रमुख प्रतिनिधि माना जाता है।

- मन्नू भण्डारी 'नयी कहानी' आंदोलन से जुड़ी हैं, जो शुक्लोत्तर युग के बाद का दौर है।  
दिए गए विकल्पों में, विनय मोहन शर्मा सबसे उपयुक्त उत्तर हैं।

#### Quick Tip

हिंदी साहित्य के काल-विभाजन (जैसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग) और प्रत्येक युग के प्रमुख लेखकों और उनकी प्रवृत्तियों को समझना महत्वपूर्ण है।

---

### 4. हजारीप्रसाद द्विवेदी लेखक हैं :

- (A) पानी के प्राचीर के
- (B) आपका बंटी के
- (C) बूंद और समुद्र के
- (D) बाणभट्ट की आत्मकथा के

**Correct Answer:** (D) बाणभट्ट की आत्मकथा के

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में पूछा गया है कि दी गई रचनाओं में से कौन सी रचना हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखी गई है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

- 'बाणभट्ट की आत्मकथा' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है।
  - 'पानी के प्राचीर' के लेखक रामदरश मिश्र हैं।
  - 'आपका बंटी' की लेखिका मन्नू भण्डारी हैं।
  - 'बूंद और समुद्र' के लेखक अमृतलाल नागर हैं।
- अतः, सही विकल्प (D) है।

**Quick Tip**

प्रसिद्ध लेखकों की कम से कम 2-3 प्रमुख रचनाओं को याद रखें। अक्सर परीक्षा में मिलान करने वाले या सीधे लेखक-रचना पर आधारित प्रश्न आते हैं।

**5. निम्नलिखित में से जयशंकर प्रसाद का नाटक नहीं है :**

- (A) अजातशत्रु
- (B) स्कन्दगुप्त
- (C) ध्रुवस्वामिनी
- (D) अन्धेर नगरी

**Correct Answer:** (D) अन्धेर नगरी

**Solution:****Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में यह पहचानना है कि दिए गए नाटकों में से कौन सा नाटक जयशंकर प्रसाद द्वारा नहीं लिखा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

- 'अजातशत्रु', 'स्कन्दगुप्त', और 'ध्रुवस्वामिनी' तीनों जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक हैं।
  - 'अन्धेर नगरी' भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध प्रहसन (व्यंग्य नाटक) है।
- चूंकि प्रश्न में पूछा गया है कि कौन सा नाटक जयशंकर प्रसाद का नहीं है, इसलिए सही उत्तर (D) 'अन्धेर नगरी' है।

### Quick Tip

परीक्षा में "नहीं", "असत्य", "गलत" जैसे नकारात्मक शब्दों पर विशेष ध्यान दें। जल्दबाजी में इन शब्दों को नजरअंदाज करने से उत्तर गलत हो सकता है।

### 6. रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं :

- (A) बिहारी लाल
- (B) बोधा
- (C) भिखारीदास
- (D) घनानन्द

**Correct Answer:** (C) भिखारीदास

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में रीतिकाल की रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि की पहचान करनी है।

#### Step 2: Key Concept:

रीतिकाल को तीन प्रमुख धाराओं में बांटा गया है :

1. **रीतिबद्ध:** वे कवि जिन्होंने लक्षण ग्रंथों (काव्यशास्त्र के नियमों) की रचना की। (जैसे - केशवदास, चिंतामणि, भिखारीदास)
2. **रीतिसिद्ध:** वे कवि जिन्होंने लक्षण ग्रंथों की रचना तो नहीं की, पर काव्य रचना में उनका पूरा ध्यान रखा। (जैसे - बिहारी लाल)
3. **रीतिमुक्त :** वे कवि जिन्होंने रीति के बंधनों से मुक्त होकर स्वच्छंद काव्य रचना की। (जैसे - घनानन्द, बोधा, आलम)

#### Step 3: Detailed Explanation:

- बिहारी लाल रीतिसिद्ध धारा के कवि हैं।
  - बोधा और घनानन्द रीतिमुक्त धारा के कवि हैं।
  - भिखारीदास रीतिबद्ध धारा के प्रमुख कवि और आचार्य हैं। उन्होंने 'काव्य-निर्णय' जैसे लक्षण ग्रंथों की रचना की है।
- अतः, सही उत्तर (C) है।

### Quick Tip

रीतिकाल की तीनों धाराओं (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त) के प्रमुख कवियों के नाम और उनकी विशेषताओं को एक तालिका बनाकर याद करें। यह एक बहुत महत्वपूर्ण विषय है।

7. 'पद्माभरण' के रचयिता हैं :

- (A) सेनापति
- (B) केशव
- (C) पद्माकर
- (D) भूषण

**Correct Answer:** (C) पद्माकर

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में 'पद्माभरण' नामक ग्रंथ के रचयिता का नाम पूछा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

'पद्माभरण' रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि पद्माकर द्वारा रचित एक अलंकार-ग्रंथ है।

इस रचना के नाम ('पद्माभरण') में ही रचयिता ('पद्माकर') का नाम छिपा हुआ है, जो इसे याद रखने में मदद करता है।

पद्माकर रीतिकाल के अंतिम प्रसिद्ध कवियों में से एक हैं। उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ 'जगद्विनोद' और 'गंगालहरी' हैं।

इसलिए, सही विकल्प (C) है।

#### Quick Tip

कभी-कभी रचना के नाम में ही उसके लेखक का संकेत छिपा होता है। ऐसे नामों पर ध्यान देने से उत्तर देना आसान हो जाता है।

8. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना है :

- (A) कनुप्रिया
- (B) सुनहरे शैवाल
- (C) ठण्डा लोहा
- (D) राम की शक्ति पूजा

**Correct Answer:** (D) राम की शक्ति पूजा

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में पूछा गया है कि दिए गए विकल्पों में से कौन सी रचना सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी की है।

## Step 2: Detailed Explanation:

आइए दिए गए विकल्पों का विश्लेषण करें:

- (A) कनुप्रिया : यह रचना प्रसिद्ध कवि और लेखक धर्मवीर भारती द्वारा लिखी गई है।  
(B) सुनहरे शैवाल : यह काव्य-संग्रह 'अज्ञेय' (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन) की रचना है।  
(C) ठण्डा लोहा : यह भी धर्मवीर भारती का एक प्रसिद्ध कविता संग्रह है।  
(D) राम की शक्ति पूजा : यह सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित एक अत्यंत प्रसिद्ध और लम्बी कविता है। यह कविता उनके काव्य संग्रह 'अनामिका' (द्वितीय) में संकलित है। स्पष्ट है कि सही उत्तर विकल्प (D) है।

### Quick Tip

छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों - जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा की प्रमुख रचनाओं को हमेशा याद रखें। इनसे संबंधित प्रश्न लगभग हर हिंदी साहित्य की परीक्षा में पूछे जाते हैं।

## 9. प्रयोगवादी कवि हैं :

- (A) भारत भूषण अग्रवाल  
(B) केदारनाथ अग्रवाल  
(C) रामधारी सिंह 'दिनकर'  
(D) सुमित्रानन्दन पन्त

**Correct Answer:** (A) भारत भूषण अग्रवाल

**Solution:**

### Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए कवियों में से प्रयोगवादी कवि की पहचान करनी है।

### Step 2: Key Concept:

प्रयोगवाद का प्रारंभ 'अज्ञेय' द्वारा संपादित 'तार सप्तक' (1943) से माना जाता है। इस धारा के कवियों ने काव्य में नए प्रयोगों पर बल दिया।

### Step 3: Detailed Explanation:

- भारत भूषण अग्रवाल 'तार सप्तक' के सात कवियों में से एक थे और वे प्रयोगवाद के एक प्रमुख कवि हैं।
  - केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।
  - रामधारी सिंह 'दिनकर' मुख्य रूप से राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि हैं।
  - सुमित्रानन्दन पन्त छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं।
- अतः, सही उत्तर (A) है।

### Quick Tip

'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' के कवियों के नाम याद रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इनसे प्रयोगवादी कवियों की पहचान आसानी से हो जाती है।

10. 'आँगन के पार द्वार' के रचयिता हैं :

- (A) धर्मवीर भारती
- (B) भवानी प्रसाद मिश्र
- (C) 'अज्ञेय'
- (D) गिरिजा कुमार माथुर

**Correct Answer:** (C) 'अज्ञेय'

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में 'आँगन के पार द्वार' नामक काव्य-संग्रह के रचयिता का नाम पूछा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

'आँगन के पार द्वार' सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है।

यह रचना 1961 में प्रकाशित हुई थी।

इस कृति के लिए 'अज्ञेय' को 1964 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

इसलिए, सही विकल्प (C) है।

### Quick Tip

साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित रचनाओं और उनके लेखकों की सूची अवश्य याद करें। यह परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है।

11. 'करुण' रस का स्थायी भाव है :

- (A) क्रोध
- (B) शोक
- (C) हास्य
- (D) भय

**Correct Answer:** (B) शोक

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में करुण रस का स्थायी भाव पूछा गया है।

**Step 2: Key Concept:**

स्थायी भाव वे मूल भाव होते हैं जो मनुष्य के हृदय में स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं और अनुकूल परिस्थिति आने पर रस के रूप में प्रकट होते हैं। प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव होता है।

**Step 3: Detailed Explanation:**

- करुण रस का स्थायी भाव शोक होता है। प्रियजन के वियोग या हानि से शोक नामक स्थायी भाव जाग्रत होकर करुण रस में परिणत होता है।

- क्रोध, रौद्र रस का स्थायी भाव है।

- हास्य, हास्य रस का स्थायी भाव है।

- भय, भयानक रस का स्थायी भाव है।

अतः, सही उत्तर (B) शोक है।

#### Quick Tip

सभी प्रमुख रसों (शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शांत) और उनके स्थायी भावों की एक तालिका बनाकर याद कर लें। यह हिंदी काव्यशास्त्र का एक मूलभूत और महत्वपूर्ण विषय है।

12. 'चरण-कमल बंदौ हरि राई ।' में प्रयुक्त अलङ्कार है :

(A) उपमा

(B) उत्प्रेक्षा

(C) रूपक

(D) यमक

**Correct Answer:** (C) रूपक

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

दी गई काव्य पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार की पहचान करनी है।

**Step 2: Key Concept:**

- **उपमा अलंकार :** जहाँ उपमेय की तुलना उपमान से किसी समान गुण के आधार पर की जाए और वाचक शब्द (सा, सम, जैसा) का प्रयोग हो।

- **रूपक अलंकार :** जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाए, यानी उपमेय और उपमान को एक ही मान लिया जाए। इसमें वाचक शब्द नहीं होता।

- उत्प्रेक्षा अलंकार : जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाए। इसमें वाचक शब्द (मनु, मानो, जनु, जानो) होते हैं।

**Step 3: Detailed Explanation:**

पंक्ति 'चरण-कमल बंदौ हरि राई' का अर्थ है - मैं भगवान के कमल रूपी चरणों की वंदना करता हूँ। यहाँ 'चरण' (उपमेय) पर 'कमल' (उपमान) का अभेद आरोप है। चरण को ही कमल बता दिया गया है, उनके बीच कोई तुलना नहीं की गई है और न ही कोई वाचक शब्द है। इसलिए, यहाँ रूपक अलंकार है। यदि यह 'कमल-से चरण' होता तो उपमा अलंकार होता।

**Quick Tip**

रूपक और उपमा में अंतर को स्पष्ट रूप से समझें। उपमा में 'जैसा' या 'समान' का भाव होता है (तुलना), जबकि रूपक में 'वही है' का भाव होता है (एकरूपता)।

13. 'रोला' छन्द के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

- (A) 24
- (B) 16
- (C) 13
- (D) 11

**Correct Answer:** (A) 24

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में रोला छंद के प्रत्येक चरण (पंक्ति) में मात्राओं की संख्या पूछी गई है।

**Step 2: Key Concept:**

रोला एक सम मात्रिक छंद है, जिसका अर्थ है कि इसके सभी चरणों में मात्राओं की संख्या समान होती है।

**Step 3: Detailed Explanation:**

- रोला छंद के प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।
  - इसमें 11 और 13 मात्राओं पर यति (विराम) होती है।
  - विकल्प (B) 16 मात्राएँ चौपाई छंद में होती हैं।
  - विकल्प (C) 13 और (D) 11 मात्राएँ दोहा और सोरठा छंदों के विषम और सम चरणों में होती हैं।
- अतः, रोला के प्रत्येक चरण में कुल 24 मात्राएँ होती हैं।

### Quick Tip

प्रमुख मात्रिक छंदों (दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला) की मात्राओं की संख्या और यति के नियम को याद कर लें। यह परीक्षा में अक्सर पूछा जाने वाला प्रश्न है।

14. 'अभ्यागत' शब्द में उपसर्ग है :

- (A) अनु
- (B) अपि
- (C) अव
- (D) अभि

**Correct Answer:** (D) अभि

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

'अभ्यागत' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग को पहचानना है।

**Step 2: Key Concept:**

उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं। शब्द का सही उपसर्ग जानने के लिए संधि-विच्छेद करना सहायक होता है।

**Step 3: Detailed Explanation:**

'अभ्यागत' शब्द का संधि-विच्छेद करने पर हमें मिलता है :

अभ्यागत = अभि + आगत

यह यण संधि का उदाहरण है, जहाँ 'इ' + 'आ' मिलकर 'या' बन जाता है।

यहाँ मूल शब्द 'आगत' (आया हुआ) है और उसके आगे 'अभि' उपसर्ग लगा है।

अतः, सही उपसर्ग 'अभि' है।

### Quick Tip

उपसर्ग और प्रत्यय पहचानने के लिए संधि और समास का अच्छा ज्ञान होना बहुत जरूरी है। विशेषकर यण संधि से बनने वाले शब्दों (जैसे-अत्यंत, स्वागत, प्रत्येक) में उपसर्ग पहचानना अक्सर पूछा जाता है।

15. 'नीलकमल' में समास है :

- (A) द्वन्द्व
- (B) द्विगु
- (C) कर्मधारय
- (D) बहुव्रीहि

**Correct Answer:** (C) कर्मधारय

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

'नीलकमल' शब्द में कौन सा समास है, यह बताना है।

**Step 2: Key Concept:**

- **कर्मधारय समास :** इस समास में एक पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है, अथवा एक पद उपमान और दूसरा उपमेय होता है।

- **बहुव्रीहि समास :** इसमें दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं।

**Step 3: Detailed Explanation:**

'नीलकमल' का समास-विग्रह है - नीला है जो कमल।

यहाँ 'नील' (नीला) शब्द विशेषण है और 'कमल' शब्द विशेष्य (संज्ञा) है। 'नील' शब्द 'कमल' की विशेषता बता रहा है।

जहाँ विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है, वहाँ कर्मधारय समास होता है।

यह किसी तीसरे अर्थ (जैसे किसी देवता) का बोध नहीं करा रहा है, इसलिए यह बहुव्रीहि समास नहीं है।

अतः, सही उत्तर (C) है।

#### Quick Tip

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर को ध्यान से समझें। यदि विग्रह करने पर 'है जो' या 'के समान' आए तो कर्मधारय होता है। यदि विग्रह करने पर 'जिसका/जिसकी' आए और कोई तीसरा अर्थ निकले तो बहुव्रीहि होता है (जैसे - नीलकंठ: नीला है कंठ जिसका, अर्थात् शिव)।

**16. 'योगी' शब्द का तद्भव शब्द होगा :**

- (A) जोगी
- (B) युगी
- (C) जौगी
- (D) इनमें से कोई नहीं

**Correct Answer:** (A) जोगी

## Solution:

### Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में संस्कृत के तत्सम शब्द 'योगी' का हिंदी तद्भव रूप पूछा गया है।

### Step 2: Key Concept:

- तत्सम शब्द : वे शब्द जो संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के हिंदी में आ गए हैं।

- तद्भव शब्द : वे शब्द जो संस्कृत से उत्पन्न हुए हैं, लेकिन समय के साथ परिवर्तित होकर हिंदी में प्रयोग होते हैं।

### Step 3: Detailed Explanation:

संस्कृत के तत्सम शब्दों में 'य' ध्वनि का तद्भव रूपों में 'ज' ध्वनि में परिवर्तित हो जाना एक सामान्य नियम है।

उदाहरण:

- यमुना → जमुना

- यजमान → जजमान

- युवा → जवान

इसी नियम के अनुसार, तत्सम शब्द 'योगी' का तद्भव रूप 'जोगी' होता है।

अतः, सही विकल्प (A) है।

## Quick Tip

तत्सम से तद्भव में होने वाले सामान्य ध्वनि परिवर्तनों को याद रखें, जैसे - 'य' का 'ज' में, 'व' का 'ब' में, 'श' का 'स' में, और 'क्ष' का 'ख' या 'छ' में बदलना। इससे तद्भव शब्दों को पहचानना आसान हो जाता है।

17. 'युष्मद्' शब्द की सप्तमी विभक्ति, एकवचन का रूप होगा :

- (A) तव
- (B) त्वत्
- (C) त्वयि
- (D) तुभ्यम्

**Correct Answer:** (C) त्वयि

## Solution:

### Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में 'युष्मद्' (अर्थ- तुम) सर्वनाम शब्द का सप्तमी विभक्ति, एकवचन का रूप पूछा गया है।

### Step 2: Key Concept:

संस्कृत व्याकरण में शब्द रूपों (विभक्ति) का ज्ञान आवश्यक है। 'युष्मद्' के एकवचन के रूप इस प्रकार

हैं:

- प्रथमा : त्वम्
- द्वितीया : त्वाम्
- तृतीया : त्वया
- चतुर्थी: तुभ्यम्
- पंचमी : त्वत्
- षष्ठी : तव
- सप्तमी : त्वयि

### Step 3: Detailed Explanation:

दिए गए विकल्पों का विश्लेषण:

- (A) तव: षष्ठी विभक्ति, एकवचन (अर्थ - तेरा, तेरी, तेरे)
- (B) त्वत् : पंचमी विभक्ति, एकवचन (अर्थ - तुझसे)
- (C) त्वयि : सप्तमी विभक्ति, एकवचन (अर्थ - तुझमें, तुझ पर)
- (D) तुभ्यम् : चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (अर्थ - तेरे लिए)

प्रश्न में सप्तमी विभक्ति, एकवचन पूछा गया है, अतः सही उत्तर 'त्वयि' है।

### Quick Tip

'अस्मद्' (मैं) और 'युष्मद्' (तुम) के शब्द रूप बहुत महत्वपूर्ण हैं और परीक्षाओं में अक्सर पूछे जाते हैं। इन दोनों के सभी विभक्तियों और वचनों के रूपों को अच्छी तरह से याद कर लें।

18. रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं ?

- (A) आठ
- (B) तीन
- (C) चार
- (D) इनमें से कोई नहीं

**Correct Answer:** (B) तीन

**Solution:**

### Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में रचना (या बनावट) के आधार पर वाक्य के भेदों की संख्या पूछी गई है।

### Step 2: Key Concept:

वाक्यों का वर्गीकरण दो मुख्य आधारों पर किया जाता है :

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

### Step 3: Detailed Explanation:

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं:

1. सरल वाक्य (Simple Sentence): जिसमें एक ही मुख्य क्रिया हो। (जैसे - राम खेलता है।)
2. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence): जिसमें दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चय-बोधक अव्ययों (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए) से जुड़े हों। (जैसे - राम आया और श्याम चला गया।)
3. मिश्र वाक्य (Complex Sentence): जिसमें एक मुख्य उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों। (जैसे - शिक्षक ने बताया कि कल छुट्टी है।)

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं। चूँकि प्रश्न में रचना के आधार पर पूछा गया है, इसलिए सही उत्तर तीन है।

#### Quick Tip

'रचना के आधार पर' (3 भेद) और 'अर्थ के आधार पर' (8 भेद) वाक्यों के वर्गीकरण के बीच के अंतर को हमेशा याद रखें। प्रश्न को ध्यान से पढ़ें कि किस आधार पर भेद पूछा गया है।

### 19. 'भाववाच्य' में प्रधानता होती है :

- (A) कर्ता की
- (B) कर्म की
- (C) क्रिया की
- (D) इनमें से कोई नहीं

**Correct Answer:** (C) क्रिया की

**Solution:**

#### Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में पूछा गया है कि भाववाच्य (Impersonal Voice) में किसकी प्रधानता होती है।

#### Step 2: Key Concept:

हिंदी में वाच्य के तीन भेद होते हैं:

1. कर्तृवाच्य (Active Voice): इसमें कर्ता की प्रधानता होती है और क्रिया का लिंग-वचन कर्ता के अनुसार होता है। (जैसे - राम पुस्तक पढ़ता है।)
2. कर्मवाच्य (Passive Voice): इसमें कर्म की प्रधानता होती है और क्रिया का लिंग-वचन कर्म के अनुसार होता है। (जैसे - राम द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।)
3. भाववाच्य (Impersonal Voice): इसमें न कर्ता की प्रधानता होती है, न कर्म की, बल्कि क्रिया के भाव की प्रधानता होती है। क्रिया सदैव अकर्मक, अन्य पुरुष, पुल्लिंग और एकवचन में रहती है।

#### Step 3: Detailed Explanation:

भाववाच्य में क्रिया का भाव ही मुख्य होता है। उदाहरण के लिए, "अब चला जाए।" या "मरीज से उठा नहीं जाता।" इन वाक्यों में क्रिया ही प्रमुख है।

अतः, भाववाच्य में किर्या की प्रधानता होती है।

### Quick Tip

वाच्य पहचानने का सरल तरीका : देखें कि किर्या किसके अनुसार बदल रही है - कर्ता के, कर्म के, या किसी के अनुसार नहीं (और हमेशा पुल्लिंग एकवचन में है)। इससे वाच्य का भेद स्पष्ट हो जाएगा।

20. 'अविकारी' शब्द है :

- (A) इन्द्र
- (B) गाय
- (C) यथासम्भव
- (D) आप

**Correct Answer:** (C) यथासम्भव

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

दिए गए विकल्पों में से अविकारी शब्द को पहचानना है।

**Step 2: Key Concept:**

प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं:

1. विकारी शब्द : वे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, कारक आदि के कारण बदल जाता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और किर्या विकारी शब्द हैं।
2. अविकारी शब्द (या अव्यय): वे शब्द जिनका रूप कभी नहीं बदलता। किर्या-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।

**Step 3: Detailed Explanation:**

- (A) इन्द्र: यह एक संज्ञा शब्द है, जो विकारी है (जैसे - इन्द्र का)।
  - (B) गाय: यह एक संज्ञा शब्द है, जो विकारी है (जैसे - गायें)।
  - (C) यथासम्भव : यह एक किर्या-विशेषण (अव्यय) है। इसका रूप किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलता। हम कहते हैं 'लड़का यथासम्भव प्रयास करेगा', 'लड़की यथासम्भव प्रयास करेगी', 'लड़के यथासम्भव प्रयास करेंगे'। शब्द 'यथासम्भव' अपरिवर्तित रहता है। अतः यह अविकारी है।
  - (D) आप: यह एक सर्वनाम शब्द है, जो विकारी है (जैसे - आपका, आपको)।
- इसलिए, सही उत्तर (C) है।

### Quick Tip

किसी शब्द को वाक्य में प्रयोग करके देखें। यदि उसका रूप लिंग या वचन बदलने पर भी नहीं बदलता है, तो वह अविकारी (अव्यय) शब्द है।

## Section - B

21(क). निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्बृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा-पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर ले जाएगी।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: संदर्भ लेखन**

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य-खण्ड' में संकलित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'मित्त्रता' नामक निबन्ध से अवतरित है।

इसमें लेखक ने संगति के प्रभाव का वर्णन करते हुए युवाओं को अच्छी संगति अपनाने के लिए प्रेरित किया है।

### Quick Tip

संदर्भ लिखते समय पाठ का नाम और लेखक का नाम सही-सही लिखना बहुत महत्वपूर्ण है। इसे काले पेन से या रेखांकित करके प्रस्तुत करने से अच्छे अंक मिलते हैं। संदर्भ में यह भी उल्लेख करना चाहिए कि गद्यांश में क्या कहा जा रहा है।

21(क). निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्बृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा-पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर ले जाएगी।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

## Solution:

### Step 1: व्याख्या

लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते हैं कि बुरी संगति एक भयानक रोग की तरह है जो व्यक्ति के चरित्र और बुद्धि को नष्ट कर देती है।

इस अंश में लेखक ने बताया है कि यदि किसी युवा व्यक्ति की संगति बुरी हो जाती है, तो वह उसके पैरों में बंधी चक्की के समान बन जाती है।

जिस प्रकार पैरों में बंधी चक्की व्यक्ति को आगे नहीं बढ़ने देती और उसे गिरा देती है, उसी प्रकार बुरी संगति व्यक्ति को पतन के अंधकार भरे गड्ढे में धकेलती रहती है।

इसके विपरीत, यदि संगति अच्छी होती है, तो वह एक मजबूत सहारे की तरह होती है, जो व्यक्ति को गिरने पर संभालती है और उसे लगातार प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ाती है।

### Quick Tip

व्याख्या करते समय, गद्यांश में दिए गए रूपकों और उपमाओं (जैसे 'पैरों में बंधी चक्की' और 'सहारा देने वाली बाहु') का अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक है। अपने शब्दों में सरल भाषा में व्याख्या करें ताकि परीक्षक को आपकी समझ का पता चल सके।

21(क). निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा-पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बंधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर ले जाएगी।

(iii) 'सुदृढ़ बाहु' का क्या अर्थ है ?

## Solution:

### Step 1: अर्थ स्पष्टीकरण

'सुदृढ़ बाहु' का शाब्दिक अर्थ है 'मजबूत भुजा' या 'शक्तिशाली हाथ'।

इस गद्यांश के संदर्भ में, इसका तात्पर्य एक ऐसे मित्र या ऐसी अच्छी संगति से है जो हर परिस्थिति में सहारा और सहायता प्रदान करती है।

यह व्यक्ति को गिरने से बचाती है और उसे उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिए बल और प्रेरणा देती है।

### Quick Tip

गद्यांश पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देते समय, शब्द का शाब्दिक अर्थ बताने के साथ-साथ उसका प्रासंगिक अर्थ भी समझाना चाहिए। इससे उत्तर की गुणवत्ता बढ़ती है।

21(ख). निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है । उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है । पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक बन जाएगा और आज जो तरुण है, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे । उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जाएगा जो भविष्य का स्वप्न देखेगा । दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए ।

**Solution:**

**Step 1: संदर्भ लेखन**

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य-खण्ड' में संकलित श्री पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी द्वारा लिखित 'क्या लिखूँ?' नामक निबन्ध से उद्धृत है ।

इसमें लेखक ने साहित्य और जीवन के परिवर्तनशील स्वरूप पर प्रकाश डाला है और बताया है कि समय के साथ विचार और मान्यताएँ कैसे बदलती हैं ।

#### Quick Tip

संदर्भ लिखते समय, पाठ का नाम ('क्या लिखूँ?') और लेखक का नाम (पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी) स्पष्ट रूप से उल्लेख करना अनिवार्य है । यह उत्तर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इस पर अलग से अंक निर्धारित होते हैं ।

21(ख). निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है । उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है । पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक बन जाएगा और आज जो तरुण है, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे । उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जाएगा जो भविष्य का स्वप्न देखेगा । दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं ।

(ii) गद्यांश के रेखाङ्कित अंश की व्याख्या कीजिए ।

**Solution:**

**Step 1: व्याख्या**

लेखक श्री पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी जी कहते हैं कि समय परिवर्तनशील है और यह साहित्य पर भी लागू होता है ।

रेखांकित अंश में लेखक यह कहना चाहते हैं कि आज जो युवा पीढ़ी उत्साह के साथ भविष्य के लिए

प्रगतिशील साहित्य का निर्माण कर रही है, वही पीढ़ी समय के साथ वृद्ध हो जाएगी। वृद्ध होने पर वे अपने युवावस्था में किए गए कार्यों को, यानी अतीत के गौरव को, याद करके उस पर गर्व करेंगे और उसके सपने देखेंगे। तब तक एक नई युवा पीढ़ी उनका स्थान ले लेगी, जो अपने समय के अनुसार भविष्य के नए सपने देखेगी और नए साहित्य का सृजन करेगी। यह क्रम निरंतर चलता रहता है, क्योंकि हर पीढ़ी अपने भविष्य को लेकर उत्साहित रहती है।

### Quick Tip

व्याख्या करते समय, लेखक के मूल भाव को समझना और उसे अपने शब्दों में स्पष्ट करना चाहिए। यहाँ लेखक समय के चक्रीय प्रवाह और पीढ़ीगत बदलाव को दर्शाना चाहते हैं। 'दूर के ढोल सुहावने' मुहावरे का भी इसमें गहरा संबंध है।

21(ख). निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :  
हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक बन जाएगा और आज जो तरुण है, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जाएगा जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

(iii) प्रस्तुत गद्यांश में 'प्रगतिशीलता' से क्या तात्पर्य है ?

**Solution:**

**Step 1: अर्थ स्पष्टीकरण**

प्रस्तुत गद्यांश में 'प्रगतिशीलता' से तात्पर्य है साहित्य में नवीन विचारों, भावनाओं और शैलियों का समावेश करना जो भविष्य की ओर देखता हो।

यह एक ऐसी साहित्यिक प्रवृत्ति है जो पुरानी रूढ़ियों और परम्पराओं को छोड़कर समाज और साहित्य को एक नई दिशा देने का प्रयास करती है।

प्रगतिशील साहित्यकार यह मानते हैं कि उनका साहित्य भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक का काम करेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए गौरव का विषय बनेगा। हालांकि लेखक यह भी इंगित करते हैं कि यह प्रगतिशीलता भी समय के साथ अतीत बन जाती है।

### Quick Tip

किसी विशेष शब्द का तात्पर्य समझाने के लिए, पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को ध्यान में रखना चाहिए। 'प्रगतिशीलता' का अर्थ यहाँ केवल 'आगे बढ़ना' नहीं, बल्कि 'साहित्यिक और वैचारिक नवीनता' है जो भविष्योन्मुखी हो।

22(क). निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल  
आगे गैयाँ पाछे ग्वाल गावै मृदु बानि री ।  
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर जैसी,  
बंक चितवनि मंद-मंद मुसकानि री ।  
कदम बिटप के निकट तटिनी के तट  
अटा चढ़ि चाहि पीत पट फहरानि री ।  
रस बरसावै तन-तपनि बुझावै नैन,  
प्रांनि रिझावै वह आवै रसखानि री ॥

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए ।

**Solution:**

प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित 'सवैये' शीर्षक से अवतरित है। यह कृष्ण-भक्ति शाखा के प्रमुख कवि रसखान द्वारा रचित है। इस सवैये में कवि ने संध्या के समय वन से लौटते हुए श्रीकृष्ण के मनमोहक रूप का सजीव चित्रण किया है।

#### Quick Tip

संदर्भ लिखते समय कवि का नाम, कविता का शीर्षक और प्रसंग (कविता का मुख्य भाव) का उल्लेख अवश्य करें। इससे उत्तर पूर्ण और प्रभावशाली बनता है। कवि और शीर्षक को रेखांकित करना एक अच्छी प्रस्तुति मानी जाती है।

22(क). निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल  
आगे गैयाँ पाछे ग्वाल गावै मृदु बानि री ।  
... (पद्यांश ऊपर दिया गया है) ...  
प्रांनि रिझावै वह आवै रसखानि री ॥

(ii) गोरज के बीच कृष्ण के सुन्दर रूप का सजीव चित्रण कवि ने किस प्रकार किया है ?

**Solution:**

कवि रसखान ने श्रीकृष्ण के सौन्दर्य का सजीव चित्रण करते हुए कहा है कि:

- भाल पर गोरज : जब श्रीकृष्ण वन से लौट रहे हैं, तो गायों के खुरों से उड़ी धूल (गोरज) उनके मस्तक पर सुशोभित हो रही है।

- वनमाला : उनके वक्षस्थल पर वन-पुष्पों की माला लहरा रही है।
- मधुर संगीत : उनके आगे गायें और पीछे ग्वाल-बाल मधुर स्वर में गीत गाते हुए चल रहे हैं।
- मनमोहक छवि : उनकी तिरछी चितवन और मंद-मंद मुस्कान अत्यंत आकर्षक है।
- बाँसुरी की धुन : वे मधुर-मधुर ध्वनि में बाँसुरी बजा रहे हैं।

इस प्रकार, कवि ने दृश्य, श्रव्य और भाव-बिम्बों के माध्यम से श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य को जीवंत कर दिया है।

### Quick Tip

किसी काव्यांश में सौंदर्य-चित्रण का उत्तर देते समय, कविता में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों और पंक्तियों का उल्लेख करते हुए बिंदुवार (bullet points) व्याख्या करना प्रभावी होता है। यह आपके उत्तर को संरचित और स्पष्ट बनाता है।

22(क). निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

... (पद्यांश ऊपर दिया गया है) ...

रस बरसावै तन-तपनि बुझावै नैन,  
प्राणनि रिझावै वह आवै रसखानि री ॥

(iii) पद्यांश के रेखाङ्कित अंश की व्याख्या कीजिए ।

**Solution:**

रेखांकित अंश "प्राणनि रिझावै वह आवै रसखानि री ॥" की व्याख्या इस प्रकार है :

एक गोपी अपनी सखी से कहती है कि हे सखी! रस की खान अर्थात् आनंद के सागर श्रीकृष्ण आ रहे हैं। उनका सौंदर्य ऐसा है जो रस की वर्षा कर रहा है, शरीर की तपन को शांत कर रहा है और नेत्रों को शीतलता प्रदान कर रहा है। उनका यह मनमोहक रूप प्राणों को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और उन्हें रिझा रहा है। इस पंक्ति में कवि रसखान ने अपना नाम भी [?]ता से जोड़ते हुए श्रीकृष्ण के सौन्दर्य के प्रभाव का वर्णन किया है जो दर्शकों के तन, मन और प्राण तीनों को आनंदित कर देता है।

### Quick Tip

रेखांकित अंश की व्याख्या करते समय, उस पंक्ति के पहले और बाद की पंक्तियों से उसका संबंध जोड़कर व्याख्या करें। इससे भाव अधिक स्पष्ट होता है। 'रसखानि' शब्द के दोहरे अर्थ (कवि का नाम और रस की खान) को उजागर करना उत्तर को और भी बेहतर बना देगा।

22(ख). निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

फूल झरता है  
फूल शब्द नहीं ।  
बच्चा गेंद उछालता है,  
सदियों के पार  
लोकती है उसे एक बच्ची ।  
बूढ़ा गाता है एक पद्य,  
दुहराता है दूसरा बूढ़ा,  
भूगोल और इतिहास से परे  
किसी दालान में बैठा हुआ ।

(i) उपर्युक्त कविता के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए ।

**Solution:**

प्रस्तुत पद्यांश के कवि श्री अशोक वाजपेयी हैं और कविता का शीर्षक 'युवा जंगल' है।

#### Quick Tip

आधुनिक कविताओं के संदर्भ में कवि और शीर्षक का नाम याद रखना महत्वपूर्ण है। परीक्षा से पहले अपनी पाठ्य-पुस्तक के सभी पाठों और उनके लेखकों/कवियों की सूची बना लें और उसे दोहराएँ।

22(ख). निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

... (पद्यांश ऊपर दिया गया है) ...

बूढ़ा गाता है एक पद्य,  
दुहराता है दूसरा बूढ़ा,  
भूगोल और इतिहास से परे  
किसी दालान में बैठा हुआ ।

(ii) रेखाङ्कित पद्यांश का अंश स्पष्ट कीजिए ।

**Solution:**

रेखांकित अंश में कवि अशोक वाजपेयी जी कहते हैं कि मानवीय संस्कृति और परम्पराएँ समय और स्थान की सीमाओं से परे होती हैं।

जब एक बूढ़ा व्यक्ति कहीं किसी दालान में बैठकर कोई गीत या पद गाता है, तो वही गीत या पद किसी दूसरे स्थान पर या किसी दूसरे समय में कोई दूसरा बूढ़ा व्यक्ति भी दुहराता है। यह क्रिया किसी

विशिष्ट भूगोल (देश, प्रदेश) या इतिहास (समय, काल) से बंधी नहीं है। यह एक सार्वभौमिक और शाश्वत मानवीय क्रिया है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। यह हमारी साझी सांस्कृतिक विरासत की निरंतरता का प्रतीक है।

### Quick Tip

आधुनिक कविता की व्याख्या करते समय, प्रतीकात्मक अर्थ पर ध्यान केंद्रित करें। यहाँ 'बूढ़ा', 'पद्य' और 'दालान' केवल शाब्दिक अर्थ नहीं रखते, बल्कि वे क्रमशः परम्परा, संस्कृति और सार्वभौमिक मानवीय परिवेश के प्रतीक हैं।

22(ख). निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :  
... (पद्यांश ऊपर दिया गया है) ...

(iii) कवि पद्यांश में किसकी विशेषता बता रहा है ?

### Solution:

इस पद्यांश में कवि मानवीय क्रियाओं और सांस्कृतिक परम्पराओं की शाश्वतता और सार्वभौमिकता की विशेषता बता रहा है।  
कवि के अनुसार, कुछ कार्य जैसे बच्चे का गेंद उछालना और बूढ़े का गीत गाना, देश, काल और सीमाओं से परे हैं। ये क्रियाएँ सदियों से दोहराई जाती रही हैं और भविष्य में भी दोहराई जाती रहेंगी। ये भूगोल और इतिहास की सीमाओं को लांघकर मानव जीवन की निरंतरता और उसकी सहज प्रवृत्तियों को प्रकट करती हैं। अतः कवि जीवन के इसी सनातन और सार्वभौमिक पक्ष की विशेषता पर प्रकाश डाल रहा है।

### Quick Tip

जब कविता की 'विशेषता' पृच्छी जाए, तो कविता के केंद्रीय भाव या मूल संदेश को पकड़ने का प्रयास करें। इस कविता का मूल भाव यह है कि भौतिक वस्तुएँ (जैसे फूल) नश्वर हैं, लेकिन मानवीय क्रियाएँ, भावनाएँ और संस्कृति अमर हैं।

23(क). नीचे दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का संदर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :  
वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे-गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते । अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवा-  
ग्धारा सततं प्रवहति, जनानां ज्ञानं च वर्धयति । अत्र अनेके आचार्याः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवा-  
ङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरताः ।

## Solution:

### संदर्भ:

प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' में संकलित 'वाराणसी' नामक पाठ से उद्धृत है। इस गद्यांश में वाराणसी की ज्ञान-परम्परा और संस्कृत भाषा के केंद्र के रूप में उसकी महत्ता का वर्णन किया गया है।

### हिन्दी में अनुवाद :

वाराणसी में प्राचीन काल से ही घर-घर में विद्या का दिव्य प्रकाश चमकता है। आज भी यहाँ संस्कृत वाणी की धारा निरन्तर बहती है और लोगों का ज्ञान बढ़ाती है। यहाँ अनेक आचार्य, मूर्धन्य (उच्च कोटि के) विद्वान वैदिक साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में इस समय लगे हुए हैं।

### Quick Tip

संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करते समय, शब्दों के संधि-विच्छेद पर ध्यान दें, जैसे 'अधुनाऽपि' का अर्थ 'अधुना + अपि' (आज भी) है। विभक्ति और वचन के अनुसार शब्दों का सही अर्थ लगाना सटीक अनुवाद के लिए महत्वपूर्ण है।

23(ख). नीचे दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का संदर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :  
एतस्मिन्नेव काले तस्य ग्रामीणस्य ग्रामः आगतः । स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्रामं प्रति अचलत् । नागरिकः लज्जितः भूत्वा तूष्णीम् अतिष्ठत् । सर्वे यात्रिणः वाचालं तं नागरिकं दृष्ट्वा अहसन् । तदा स नागरिकः अन्वभवत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति ।

## Solution:

### संदर्भ:

प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' में संकलित 'प्रबुद्धो ग्रामीणः' (बुद्धिमान ग्रामीण) नामक पाठ से लिया गया है। इसमें एक चतुर ग्रामीण द्वारा अपनी पहेली से शहरी नागरिक को पराजित करने और नागरिक के ज्ञान के अभिमान को तोड़ने का प्रसंग है।

### हिन्दी में अनुवाद :

इसी समय उस ग्रामीण का गाँव आ गया। वह हँसता हुआ रेलगाड़ी से उतरकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा। नागरिक लज्जित होकर चुपचाप बैठ गया। सभी यात्री उस बहुत बोलने वाले नागरिक को देखकर हँसने लगे। तब उस नागरिक ने अनुभव किया कि ज्ञान सब जगह संभव है।

### Quick Tip

अनुवाद करते समय क्रिया के काल (tense) और कर्ता (subject) को पहचानना आवश्यक है। यहाँ 'अचलत्', 'अतिष्ठत्', 'अहसन्', 'अन्वभवत्' सभी भूतकाल (लङ् लकार) की क्रियाएँ हैं, जो अनुवाद को भूतकाल में रखने का संकेत देती हैं।

24(क). नीचे दिए गए संस्कृत श्लोक में से किसी एक का संदर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :  
नीर-क्षीर-विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् ।  
विश्वमिस्मन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः ॥

**Solution:**

**संदर्भ:**

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' के 'अन्योक्तिविलासः' (अन्योक्तियों का सौन्दर्य) नामक पाठ से उद्धृत है। इस श्लोक में हंस के माध्यम से विवेकशील और गुणी मनुष्यों को सम्बोधित करते हुए उन्हें अपने कर्तव्य से विमुख न होने की प्रेरणा दी गई है।

**हिन्दी में अनुवाद :**

(कवि हंस को सम्बोधित करते हुए कहता है) हे हंस! यदि तुम ही दूध और पानी को अलग करने में आलस्य करोगे, तो इस संसार में अब दूसरा कौन अपने कुल-व्रत (कर्तव्य) का पालन करेगा ?  
भावार्थ: यदि विद्वान और गुणी व्यक्ति ही अपने विवेक का प्रयोग करके उचित-अनुचित का निर्णय करने में आलस्य करेंगे, तो संसार में अन्य साधारण व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन कैसे करेंगे ?

### Quick Tip

'अन्योक्ति' का अर्थ है किसी और के माध्यम से अपनी बात कहना। ऐसे श्लोकों का अनुवाद करते समय शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ उसका प्रतीकात्मक भावार्थ भी स्पष्ट करना चाहिए। यहाँ हंस विवेकशील व्यक्ति का प्रतीक है और नीर-क्षीर-विवेक न्याय-अन्याय के निर्णय का प्रतीक है।

24(ख). नीचे दिए गए संस्कृत श्लोक में से किसी एक का संदर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :  
दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यं दानमेकपदं यशः ।  
सत्यमेकपदं स्वग्यं शीलमेकपदं सुखम् ॥

**Solution:**

**संदर्भ:**

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' के 'जीवन सूत्रानि' (जीवन के सूत्र)

नामक पाठ से लिया गया है। यह श्लोक महाभारत के यक्ष-युधिष्ठिर संवाद से उद्धृत है, जिसमें यक्ष के प्रश्नों का युधिष्ठिर उत्तर देते हैं।

**हिन्दी में अनुवाद :**

(युधिष्ठिर उत्तर देते हैं) कुशलता (दक्षता) धर्म का मुख्य स्थान है, दान यश का मुख्य स्थान है, सत्य स्वर्ग (प्राप्ति) का मुख्य स्थान है और उत्तम आचरण (शील) सुख का मुख्य स्थान है।

### Quick Tip

इस श्लोक में 'एकपदं' शब्द का अर्थ 'एकमात्र स्थान' या 'मुख्य साधन' है। सूत्रात्मक श्लोकों का अनुवाद करते समय सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए ताकि उसका गूढ़ अर्थ आसानी से समझ में आ सके।

25(क)(i). 'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य के आधार पर 'चन्द्रशेखर आज़ाद' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

**Solution:**

डॉ. जयशंकर त्रिपाठी द्वारा रचित 'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य के नायक अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद हैं। कवि ने उन्हें एक अद्वितीय देशभक्त, साहसी और दृढ़-निश्चयी वीर के रूप में चित्रित किया है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **महान देशभक्त :** आज़ाद का सम्पूर्ण जीवन भारत माता को स्वाधीन कराने के लिए समर्पित था। वे बचपन से ही देश की दुर्दशा से दुखी थे और उन्होंने अपना सर्वस्व मातृभूमि के लिए न्योछावर कर दिया।
- **वीर और साहसी :** आज़ाद अद्भुत वीर और साहसी थे। वे काकोरी काण्ड, साण्डर्स-वध आदि अनेक क्रांतिकारी घटनाओं में सम्मिलित रहे। वे अंग्रेजों से कभी भयभीत नहीं हुए और अकेले ही अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेज पुलिस दल का सामना करते रहे।
- **दृढ़-प्रतिज्ञा:** आज़ाद अपने निश्चय के बहुत पक्के थे। उन्होंने जीवित रहते अंग्रेजों के हाथ न आने की प्रतिज्ञा की थी और अन्तिम गोली शेष रहने पर स्वयं को गोली मारकर अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया।
- **महान संगठनकर्ता:** उनमें संगठन करने की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने देश के सभी क्रांतिकारियों को एक सूत्र में पिरोकर एक शक्तिशाली दल का गठन किया। भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त जैसे अनेक क्रांतिकारी उनके दल के सदस्य थे।
- **अमर शहीद :** चन्द्रशेखर आज़ाद ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। उनका यह बलिदान उन्हें अमर बना गया। वे आज भी भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

### Quick Tip

चरित्र-चित्रण करते समय, विभिन्न विशेषताओं को शीर्षकों में विभाजित करें। प्रत्येक विशेषता को प्रमाणित करने के लिए खण्डकाव्य की किसी घटना का उल्लेख अवश्य करें। इससे आपका उत्तर अधिक प्रभावशाली और विश्वसनीय होगा।

25(क)(ii). 'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य के 'बलिदान' सर्ग का कथानक लिखिए।

### Solution:

'बलिदान' सर्ग 'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य का अन्तिम और सबसे मार्मिक सर्ग है। इसका कथानक इस प्रकार है :

- **आज़ाद का अल्फ्रेड पार्क में होना :** चन्द्रशेखर आज़ाद इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के अल्फ्रेड पार्क में अपने एक साथी के साथ भविष्य की योजनाओं पर चर्चा कर रहे थे।
- **विश्वासघात और पुलिस का आगमन :** तभी एक विश्वासघाती देशद्रोही ने पुलिस को सूचना दे दी। देखते ही देखते अंग्रेज पुलिस अधीक्षक नॉट-बावर और एसपी सिटी विश्वेश्वर सिंह ने भारी पुलिस बल के साथ पार्क को चारों ओर से घेर लिया।
- **भीषण संघर्ष:** आज़ाद ने अपने साथी को सुरक्षित भेज दिया और अकेले ही वृक्ष की आड़ लेकर पुलिस से लोहा लेने लगे। दोनों ओर से गोलियाँ चलने लगीं। आज़ाद ने अपनी वीरता से कई अंग्रेज सिपाहियों को घायल कर दिया और नॉट-बावर की कलाई को भी अपनी गोली से जख्मी कर दिया।
- **प्रतिज्ञा का पालन :** जब आज़ाद के पास केवल एक गोली बची, तो उन्हें अपनी प्रतिज्ञा याद आई कि वे कभी भी जीवित अंग्रेजों के हाथ नहीं आएँगे।
- **आत्म-बलिदान :** अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए उन्होंने वह अन्तिम गोली अपनी कनपटी पर दाग ली और भारत माता के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। उनके इस बलिदान से धरती काँप उठी और प्रकृति भी शोक में डूब गई। इस प्रकार, उन्होंने अपनी वीरता और त्याग से इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया।

### Quick Tip

किसी सर्ग का कथानक लिखते समय, घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से लिखें। कथा की प्रमुख घटनाओं को रेखांकित करें और सर्ग के अंत में उसके प्रभाव या महत्व पर एक-दो पंक्तियाँ अवश्य लिखें।

25(ख)(i). 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**Solution:**

पं. रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक भगवान श्रीकृष्ण हैं। वे इस खण्डकाव्य के प्राण हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **धर्म-संस्थापक और लोक-रक्षक :** श्रीकृष्ण धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिए ही अवतरित हुए हैं। वे दुष्टों का संहार करके सज्जनों की रक्षा करते हैं। शिशुपाल का वध उनके इसी चरित्र को दर्शाता है।
- **शिष्ट और विनयशील :** अपार शक्ति और ऐश्वर्य के स्वामी होते हुए भी श्रीकृष्ण अत्यंत शिष्ट और विनयशील हैं। वे युधिष्ठिर के यज्ञ में ब्राह्मणों के चरण धोने और जूठी पत्तलें उठाने का कार्य भी सहजता से करते हैं।
- **अपार शक्ति के स्वामी :** वे अलौकिक शक्ति से सम्पन्न हैं। उनके विराट रूप और सुदर्शन चक्र के तेज से सभी परिचित हैं। उन्होंने अपनी शक्ति से शिशुपाल का वध कर सभा को भयमुक्त किया।
- **उत्कृष्ट राजनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ:** श्रीकृष्ण एक महान राजनीतिज्ञ हैं। वे युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने की प्रेरणा देते हैं ताकि सभी राजा उनकी अधीनता स्वीकार करें और एक अखण्ड भारत का निर्माण हो सके।
- **निर्लिप्त कर्मयोगी :** वे कर्म में विश्वास रखते हैं और फल की इच्छा नहीं करते। वे स्वयं यज्ञ में निस्स्वार्थ भाव से सेवा कार्य करते हैं, जो उनके कर्मयोगी स्वरूप को प्रकट करता है।

**Quick Tip**

श्रीकृष्ण जैसे बहुआयामी चरित्र का चित्रण करते समय, उनके विभिन्न रूपों (जैसे- मानवीय, दैवीय, राजनीतिक) का उल्लेख करें। प्रत्येक विशेषता के समर्थन में खण्डकाव्य से उदाहरण देना उत्तर को प्रमाणित करता है।

25(ख)(ii). 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'पूर्वाभास' सर्ग का कथानक लिखिए।

**Solution:**

'पूर्वाभास' 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य का द्वितीय सर्ग है। इसका कथानक युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में 'अग्रपूजा' के प्रसंग पर आधारित है, जो भविष्य में होने वाले महाभारत युद्ध का पूर्वाभास देता है। इसका कथानक इस प्रकार है :

- **यज्ञ का आयोजन :** युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में देश-विदेश के राजा, ऋषि-मुनि और विद्वान् पधारते हैं। श्रीकृष्ण भी इस यज्ञ में सम्मिलित होते हैं।
- **अग्रपूजा का प्रश्न :** जब यज्ञ में सर्वप्रथम पूजनीय व्यक्ति (अग्रपूजा) के चयन का प्रश्न उठता है, तो युधिष्ठिर पितामह भीष्म से सलाह माँगते हैं।
- **श्रीकृष्ण का चयन :** भीष्म सभी की उपस्थिति में श्रीकृष्ण को ही अग्रपूजा के लिए सर्वश्रेष्ठ पात्र बताते हैं और उनके गुणों का बखान करते हैं। सभी राजा इस प्रस्ताव का समर्थन करते हैं।

- **शिशुपाल का विरोध :** चेदि देश का राजा शिशुपाल इस प्रस्ताव का घोर विरोध करता है। वह क्रोध में आकर भीष्म और श्रीकृष्ण को अपमानजनक शब्द कहता है और उन्हें अपशब्द कहता है।
- **श्रीकृष्ण का धैर्य और शिशुपाल का वध :** श्रीकृष्ण शिशुपाल की माता को दिए वचन के कारण उसके सौ अपमानों को क्षमा करते हैं। किन्तु जब शिशुपाल अपनी सीमा लांघ जाता है, तो श्रीकृष्ण अपने सुदर्शन चक्र से उसका वध कर देते हैं।
- **महाभारत का पूर्वाभास :** शिशुपाल के वध की घटना से सभा में उपस्थित दुर्योधन आदि कौरव पाण्डवों के शत्रु बन जाते हैं और यहीं से भविष्य में होने वाले महाभारत युद्ध की नींव पड़ जाती है। इसी कारण इस सर्ग का नाम 'पूर्वाभास' है।

### Quick Tip

सर्ग का कथानक लिखते समय, सर्ग के शीर्षक ('पूर्वाभास') की सार्थकता को अंत में अवश्य स्पष्ट करें। इससे यह पता चलता है कि आपने कथा के मूल भाव को समझ लिया है।

25(ग)(i). 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर सुभाष चन्द्र बोस की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

### Solution:

श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' द्वारा रचित 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के नायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस हैं। कवि ने उन्हें एक महान राष्ट्रनायक के रूप में चित्रित किया है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **प्रखर देशभक्त :** सुभाष चन्द्र बोस में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए आई.सी.एस. जैसे प्रतिष्ठित पद को त्याग दिया और अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया।
- **कुशल संगठनकर्ता:** उनमें संगठन की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की और विदेश जाकर 'आज़ाद हिन्द फ़ौज' का गठन किया, जिसमें हर जाति और धर्म के लोग शामिल थे।
- **अदम्य साहसी और वीर :** नेताजी अदम्य साहसी थे। वे अंग्रेजों की कड़ी निगरानी के बावजूद देश बदलकर देश से बाहर निकल गए। उन्होंने युद्ध के मैदान में अपनी सेना का नेतृत्व किया और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा" जैसा वीर नारा दिया।
- **महान त्यागी और तपस्वी :** उनका जीवन त्याग और तपस्या का प्रतीक था। उन्होंने देश के लिए घर-परिवार, पद और समस्त सुखों का त्याग कर दिया और एक संन्यासी की भाँति जीवन व्यतीत किया।
- **युवाओं के प्रेरणास्रोत :** सुभाष चन्द्र बोस का त्यागमय और संघर्षपूर्ण जीवन आज भी भारत के करोड़ों युवाओं को देश-सेवा और आत्म-बलिदान के लिए प्रेरित करता है। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक देदीप्यमान नक्षत्र हैं।

### Quick Tip

एक ऐतिहासिक नायक का चरित्र-चित्रण करते समय, उनके ऐतिहासिक महत्व और योगदान पर विशेष ध्यान दें। उनके द्वारा दिए गए प्रसिद्ध नारों या उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख उत्तर को प्रभावी बनाता है।

25(ग)(ii). 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथावस्तु लिखिए।

### Solution:

'जय सुभाष' खण्डकाव्य का तृतीय सर्ग सुभाष चन्द्र बोस के भारत से पलायन और आज़ाद हिन्द फ़ौज के गठन की घटनाओं पर आधारित है। इसकी कथावस्तु इस प्रकार है :

- **कारावास और अनशन :** द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेज सरकार सुभाष चन्द्र बोस को भारत-रक्षा कानून के अंतर्गत गिरफ्तार कर जेल में डाल देती है। जेल में वे आमरण अनशन प्रारम्भ कर देते हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है।
- **नजरबंदी :** सरकार घबराकर उन्हें जेल से रिहा कर देती है, परन्तु उन्हें कलकत्ता में उनके घर पर ही कठोर पहरे में नजरबन्द कर दिया जाता है।
- **देश से पलायन की योजना :** सुभाष बाबू यह समझते हैं कि देश में रहकर स्वतंत्रता-संग्राम को गति नहीं दी जा सकती। वे देश से बाहर जाकर अंग्रेजों के शत्रुओं से सहायता लेने की योजना बनाते हैं।
- **वेश बदलकर निकलना :** एक दिन वे पठान मौलवी का वेश धारण कर, अपना नाम जियाउद्दीन रखकर पुलिस की आँखों में धूल झाँककर घर से निकल पड़ते हैं।
- **विदेश यात्रा :** वे पेशावर, काबुल और रूस होते हुए जर्मनी पहुँचते हैं।
- **आज़ाद हिन्द फ़ौज का नेतृत्व :** जर्मनी में वे हिटलर से मिलते हैं। वहाँ से वे जापान जाते हैं और रासबिहारी बोस द्वारा स्थापित 'आज़ाद हिन्द फ़ौज' का नेतृत्व सँभालते हैं। वे सेना को पुनर्गठित करते हैं और भारत की ओर कूच करने का निश्चय करते हैं।

इस सर्ग में कवि ने सुभाष चन्द्र बोस के अदम्य साहस, बुद्धि-कौशल और दृढ़ संकल्प का सजीव चित्रण किया है।

### Quick Tip

कथावस्तु लिखते समय प्रमुख स्थानों (कलकत्ता, पेशावर, जर्मनी, जापान) और घटनाओं (अनशन, नजरबंदी, पलायन) को सही क्रम में प्रस्तुत करें। यह परीक्षक पर अच्छा प्रभाव डालता है।

25(घ)(i). 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के 'पृथ्वीराज' सर्ग का कथानक लिखिए ।

**Solution:**

'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य का 'पृथ्वीराज' सर्ग महाराणा प्रताप के स्वाभिमान और दृढ़-प्रतिज्ञा को पुनः जाग्रत करने की एक महत्वपूर्ण घटना पर आधारित है। इसका कथानक इस प्रकार है :

- बीकानेर के राजकुमार पृथ्वीराज, जो एक वीर योद्धा और कवि थे, अकबर के दरबार में रहते थे। वे मन-ही-मन महाराणा प्रताप को अपना आदर्श मानते थे।
- अकबर के दरबार में यह झूठी खबर फैल जाती है कि विपत्तियों से तंग आकर महाराणा प्रताप अकबर की अधीनता स्वीकार करने वाले हैं। यह सुनकर अकबर बहुत प्रसन्न होता है, किन्तु पृथ्वीराज को इस पर विश्वास नहीं होता।
- उनका हृदय यह मानने को तैयार नहीं था कि प्रताप जैसा वीर अपना स्वाभिमान त्याग सकता है। अपने मन की शंका को दूर करने और प्रताप के सोए हुए स्वाभिमान को जगाने के लिए वे एक ओजस्वी पत्र लिखते हैं।
- उस पत्र में वे पूछते हैं कि क्या अब सूर्य पश्चिम से उगेगा ? क्या अब राजपूत अपनी मूंछों पर ताव नहीं देंगे ? हे राणा ! आपकी वीरता पर हम सबको गर्व है, आप इस प्रकार अधीनता स्वीकार न करें।
- जब यह पत्र महाराणा प्रताप को मिलता है, तो वे उसे पढ़कर आत्मग्लानि से भर उठते हैं और उनका क्षत्रिय स्वाभिमान पुनः जाग्रत हो जाता है।
- वे पृथ्वीराज को उत्तर भेजते हैं कि जब तक प्रताप के शरीर में प्राण हैं, मेवाड़ की धरती पर मुगलों का झंडा नहीं फहरेगा और सूर्य पूर्व से ही उगेगा। यह उत्तर पाकर पृथ्वीराज का हृदय गर्व से भर जाता है।

**Quick Tip**

सर्ग का कथानक लिखते समय, कथा के आरंभ, मध्य और अंत को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करें। पत्र के माध्यम से संवाद इस सर्ग का केंद्र बिंदु है, इसलिए पत्र के भाव को अपने उत्तर में प्रमुखता दें।

25(घ)(ii). 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर महाराणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

**Solution:**

श्री गंगा रत्न पाण्डेय द्वारा रचित 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के नायक महाराणा प्रताप हैं। वे भारतीय इतिहास के शौर्य, त्याग और बलिदान के प्रतीक हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **अद्वितीय देशभक्त :** महाराणा प्रताप एक महान देशभक्त थे। उन्होंने अपनी मातृभूमि मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

- **अतुलनीय वीर एवं साहसी :** वे एक वीर और साहसी योद्धा थे। सीमित साधनों के बावजूद उन्होंने विशाल मुगल सेना का डटकर मुकाबला किया और हल्दीघाटी के युद्ध में अपनी वीरता का परिचय दिया।
- **स्वाभिमानि :** प्रताप का स्वाभिमान अद्वितीय था। उन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार करने की अपेक्षा जंगलों में भटकना, घास की रोटियाँ खाना स्वीकार किया, परन्तु अपना सिर नहीं झुकाया।
- **दृढ़-प्रतिज्ञ :** वे अपनी प्रतिज्ञा के धनी थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक वे चित्तौड़ को मुक्त नहीं करा लेंगे, तब तक वे पलंग पर नहीं सोएंगे और सोने-चाँदी के बर्तनों में भोजन नहीं करेंगे। उन्होंने आजीवन इस प्रतिज्ञा का पालन किया।
- **त्याग एवं कष्ट-सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति :** उनका जीवन त्याग और कष्ट-सहिष्णुता का अनुपम उदाहरण है। राजमहलों के सुखों को त्यागकर उन्होंने अपने परिवार के साथ वनों में अनेक कष्ट सहे।

### Quick Tip

महाराणा प्रताप का चरित्र-चित्रण करते समय उनके स्वाभिमान और देशभक्ति जैसे गुणों पर विशेष बल दें। उनकी प्रतिज्ञाओं का उल्लेख आपके उत्तर को अधिक प्रभावशाली बना देगा।

25(ड)(i). 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का कथासार लिखिए।

### Solution:

डॉ. राजेन्द्र मिश्र द्वारा रचित 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य का द्वितीय सर्ग महात्मा गाँधी के दक्षिण अफ्रीका के प्रवास और वहाँ उनके सत्याग्रह के जन्म की घटनाओं पर आधारित है। इसका कथासार इस प्रकार है :

- कवि वर्णन करता है कि किस प्रकार दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों पर गोरे शासक अत्याचार करते थे। उनका जीवन अत्यंत अपमानजनक और कष्टपूर्ण था।
- गाँधीजी एक मुकदमे के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका जाते हैं। वहाँ उन्हें भी रंगभेद की नीति का कटु अनुभव होता है। प्रिटोरिया जाते समय उन्हें प्रथम श्रेणी के डिब्बे से सामान सहित बाहर फेंक दिया जाता है।
- इस घटना से गाँधीजी के मन में गहरा आघात लगता है और वे वहाँ बसे भारतीयों को उनके अधिकार दिलाने का दृढ़ संकल्प लेते हैं।
- वे भारतीयों को संगठित करते हैं और 'सत्याग्रह' के माध्यम से रंगभेद की नीति का विरोध करने का आह्वान करते हैं।
- वे अहिंसक आंदोलन चलाते हैं, जिसके कारण उन्हें अनेक बार जेल भी जाना पड़ता है। किन्तु वे अपने पथ से विचलित नहीं होते।
- उनके प्रयासों के फलस्वरूप अंततः दक्षिण अफ्रीका की सरकार को झुकना पड़ता है और भारतीयों के विरुद्ध बनाए गए भेदभावपूर्ण कानूनों को रद्द करना पड़ता है। यह उनकी पहली महान विजय थी, जिसने सत्याग्रह रूपी अस्त्र की शक्ति को सिद्ध कर दिया।

### Quick Tip

इस सर्ग का कथासार लिखते समय, दक्षिण अफ्रीका की रेलगाड़ी वाली घटना का उल्लेख अवश्य करें क्योंकि यही घटना गाँधीजी के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ थी और यहीं से सत्याग्रह का बीजारोपण हुआ।

25(ड)(ii). 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गाँधी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

### Solution:

'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं, जिन्हें कवि ने भारत के मुक्तिदाता के रूप में चित्रित किया है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **अलौकिक पुरुष** : कवि ने गाँधीजी को एक साधारण मनुष्य न मानकर ईश्वर का अवतार माना है जो भारत को पराधीनता से मुक्त कराने के लिए जन्मे थे।
- **सत्य और अहिंसा के पुजारी** : सत्य और अहिंसा गाँधीजी के दो सबसे बड़े शस्त्र थे। उन्होंने इन्हीं के बल पर शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को पराजित किया।
- **हरिजनोद्धारक** : गाँधीजी समाज में व्याप्त छुआछूत और जाति-भेद के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने दलितों को 'हरिजन' नाम दिया और उनके उद्धार के लिए अथक प्रयास किए।
- **दृढ़-संकल्प** : वे अपने निश्चय के बहुत पक्के थे। एक बार जो निश्चय कर लेते थे, उससे कभी पीछे नहीं हटते थे। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध उनका संघर्ष और भारत में स्वतंत्रता आंदोलन इसका प्रमाण है।
- **मानवता के पथ-प्रदर्शक** : गाँधीजी केवल भारत के ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं। उन्होंने मानवता को सत्य, अहिंसा और प्रेम का मार्ग दिखाया। वे सच्चे अर्थों में एक युग-पुरुष थे।

### Quick Tip

गाँधीजी का चरित्र-चित्रण करते समय, उनके प्रमुख सिद्धांतों जैसे- सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह और हरिजनोद्धार का उल्लेख करना अनिवार्य है। ये उनके चरित्र के मूल आधार हैं।

25(च)(i). 'कर्ण' खण्डकाव्य की सबसे प्रभावशाली घटना का वर्णन कीजिए।

### Solution:

'कर्ण' खण्डकाव्य की सबसे प्रभावशाली और मार्मिक घटना देवराज इन्द्र द्वारा कर्ण से उसके जन्मजात कवच और कुण्डल का दान में माँगा जाना है। यह घटना कर्ण के 'दानवीर' चरित्र को उसकी पराकाष्ठा पर पहुँचा देती है।

- महाभारत युद्ध से पूर्व, इन्द्र अपने पुत्र अर्जुन की विजय सुनिश्चित करने के लिए कर्ण को शक्ति-हीन करना चाहते थे। वे जानते थे कि जब तक कर्ण के पास उसके जन्मजात कवच और कुण्डल हैं, उसे कोई पराजित नहीं कर सकता।
- इसलिए, इन्द्र एक वृद्ध ब्राह्मण का वेश धारण करके कर्ण के पास पहुँचते हैं, जब वह सूर्य की उपासना के बाद याचकों को दान दे रहा होता है।
- कर्ण ब्राह्मण को प्रणाम कर कुछ माँगने को कहते हैं। इन्द्र कपटपूर्वक कर्ण से दान में उसके कवच और कुण्डल ही माँग लेते हैं।
- कर्ण के सारथी और सूर्यदेव द्वारा सचेत किए जाने के बावजूद कि यह ब्राह्मण स्वयं इन्द्र हैं और छल से उसके प्राण-रक्षक कवच-कुण्डल माँग रहे हैं, कर्ण अपने दान-व्रत से विचलित नहीं होते।
- वे कहते हैं कि एक याचक को निराश लौटाना उनके धर्म के विरुद्ध है। वे अपनी जान की परवाह न करते हुए, अपने शरीर से चिपके हुए कवच और कुण्डल को छुरे से काटकर इन्द्र को दान दे देते हैं।

यह घटना कर्ण की दानवीरता, त्याग और अपने वचन के प्रति निष्ठा का चरम उदाहरण है। यह जानते हुए भी कि इस दान का अर्थ मृत्यु है, कर्ण अपने धर्म से नहीं डिगते, जो पाठक के हृदय को गहराई से प्रभावित करता है।

### Quick Tip

इस घटना का वर्णन करते समय, कर्ण के आंतरिक द्वंद्व (कर्तव्य और आत्मरक्षा के बीच) और अंततः कर्तव्य-निष्ठा की विजय को उजागर करें। यह घटना की प्रभावशीलता को बढ़ाता है।

25(च)(ii). 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर 'कुन्ती' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

### Solution:

'कर्ण' खण्डकाव्य में कुन्ती एक महत्वपूर्ण पात्र हैं, जिनका चरित्र अत्यंत जटिल और कई परतों वाला है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **विवश माता :** कुन्ती का चरित्र एक विवश और दुखी माँ का है। लोक-लाज के भय से उन्हें अपने नवजात पुत्र कर्ण का त्याग करना पड़ता है, जिसकी पीड़ा वे जीवन भर सहती हैं।
- **ममतामयी हृदय :** यद्यपि उन्होंने कर्ण का त्याग कर दिया था, किन्तु उनके हृदय में कर्ण के प्रति गहरा ममत्व था। वे गुप्त रूप से हमेशा उसके कुशल-क्षेम की कामना करती थीं।
- **पश्चाताप से ग्रस्त :** कुन्ती अपने किए पर बहुत पश्चाताप करती हैं। वे जानती हैं कि उन्होंने कर्ण के साथ घोर अन्याय किया है, जिसके कारण कर्ण को समाज में अपमान और तिरस्कार सहना पड़ा।
- **स्वार्थपरता और पुत्र-मोह :** महाभारत युद्ध से पूर्व उनका कर्ण के पास जाना उनके पुत्र-मोह और स्वार्थ को भी दर्शाता है। वे कर्ण से उसके भाइयों (पाण्डवों) की रक्षा का वचन माँगने जाती हैं ताकि उनका कोई भी पुत्र युद्ध में न मारा जाए।
- **साहसी :** अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल को स्वीकार करने और युद्ध से पहले कर्ण के समक्ष उसका रहस्य उजागर करने के लिए बहुत साहस की आवश्यकता थी, जो कुन्ती ने दिखाया।

इस प्रकार, कुन्ती का चरित्र एक ऐसी माँ का है जो सामाजिक विवशताओं, व्यक्तिगत भूलों और गहरे ममत्व के बीच फँसी हुई है।

### Quick Tip

कुन्ती का चरित्र-चित्रण करते समय उनके चरित्र के सकारात्मक (ममता, पश्चाताप) और नकारात्मक (विवशता, स्वार्थ) दोनों पहलुओं को संतुलित रूप से प्रस्तुत करें। यह एक यथार्थवादी चरित्र-चित्रण होगा।

25(छ)(i). 'तुमुल' खण्डकाव्य के नायक 'लक्ष्मण' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

### Solution:

'तुमुल' खण्डकाव्य के नायक लक्ष्मण हैं। कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने उनके चरित्र को एक आदर्श भाई, महान योद्धा और निस्वार्थ सेवक के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **आदर्श भ्राता :** लक्ष्मण में भ्रातृ-प्रेम अपने चरम पर है। वे अपने बड़े भाई श्रीराम की सेवा के लिए राज-सुखों को त्यागकर चौदह वर्षों के लिए वन चले जाते हैं। राम की सेवा ही उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है।
- **अद्वितीय वीर और साहसी योद्धा :** लक्ष्मण अतुलनीय वीर हैं। वे अकेले ही शूर्पणखा का मान-मर्दन करते हैं और खर-दूषण की सेना से लोहा लेते हैं। युद्ध में वे रावण के पुत्र मेघनाद जैसे अजेय योद्धा का वध करते हैं।
- **उग्र एवं ओजस्वी स्वभाव :** लक्ष्मण का स्वभाव अत्यंत उग्र और स्वाभिमानी है। वे अपने भाई श्रीराम या भाभी सीता का कोई भी अपमान सहन नहीं कर सकते और तुरंत क्रोधित हो जाते हैं। परशुराम-संवाद में उनका यही रूप दिखाई देता है।
- **निःस्वार्थ सेवक :** वनवास के दौरान वे एक क्षण के लिए भी विश्राम नहीं करते और रात-दिन जागकर राम-सीता की रक्षा और सेवा करते हैं। उनका जीवन निःस्वार्थ सेवा का अनुपम उदाहरण है।
- **विवेकशील :** यद्यपि वे स्वभाव से उग्र हैं, किन्तु वे विवेकशील भी हैं। वे सदैव श्रीराम की आज्ञा का पालन करते हैं और उनके निर्णयों का सम्मान करते हैं।

### Quick Tip

लक्ष्मण का चरित्र-चित्रण करते समय उनके 'भ्रातृ-प्रेम' और 'वीरता' इन दो गुणों को प्रमुखता दें। मेघनाद-वध जैसी घटनाओं का उल्लेख उनकी वीरता को प्रमाणित करने के लिए अवश्य करें।

25(छ)(ii). 'लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा' सर्ग की कथावस्तु लिखिए ।

**Solution:**

'तुमुल' खण्डकाव्य का यह सर्ग लंका-युद्ध की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और मार्मिक घटना पर आधारित है। इसकी कथावस्तु इस प्रकार है :

- रावण के कई वीर पुत्रों और योद्धाओं के मारे जाने के बाद, उसका अजेय पुत्र मेघनाद (इन्द्रजीत) युद्ध के लिए आता है।
- मेघनाद और लक्ष्मण के बीच भयंकर युद्ध छिड़ जाता है। दोनों योद्धा अपनी पूरी शक्ति और दिव्यास्त्रों का प्रयोग करते हैं। मेघनाद मायावी शक्तियों का भी प्रयोग करता है, किन्तु लक्ष्मण उसके हर प्रहार को विफल कर देते हैं।
- जब मेघनाद किसी भी तरह से लक्ष्मण को पराजित नहीं कर पाता, तो वह क्रोध में भरकर अपनी कुलदेवी से प्राप्त अमोघ 'शक्ति' अस्त्र का प्रयोग लक्ष्मण पर कर देता है।
- उस 'शक्ति' के प्रहार से लक्ष्मण मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। वानर सेना में हाहाकार मच जाता है और श्रीराम के शिविर में शोक की लहर दौड़ जाती है।
- हनुमानजी लक्ष्मण को उठाकर श्रीराम के पास लाते हैं। अपने प्रिय भाई की यह दशा देखकर श्रीराम एक साधारण मनुष्य की भाँति विलाप करने लगते हैं।
- विभीषण के कहने पर लंका के राजवैद्य सुषेण को बुलाया जाता है। सुषेण बताते हैं कि हिमालय की द्रोणगिरि पर्वत पर स्थित संजीवनी बूटी से ही सूर्योदय से पूर्व लक्ष्मण के प्राण बचाए जा सकते हैं।
- श्रीराम के आदेश पर हनुमानजी संजीवनी बूटी लाने के लिए आकाश मार्ग से हिमालय की ओर प्रस्थान करते हैं। यह सर्ग श्रीराम के भ्रातृ-प्रेम और हनुमान की स्वामी-भक्ति को उजागर करता है।

**Quick Tip**

इस सर्ग की कथावस्तु लिखते समय, युद्ध की भयंकरता, लक्ष्मण की मूर्च्छा, श्रीराम का विलाप और हनुमान का संकल्प, इन चार प्रमुख भावों और घटनाओं को क्रम से वर्णित करें।

25(ज)(i). 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के 'राम-भरत-मिलन' सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए ।

**Solution:**

'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य का 'राम-भरत-मिलन' सर्ग भ्रातृ-प्रेम की पराकाष्ठा को दर्शाने वाला एक अत्यंत मार्मिक प्रसंग है। इसका कथानक संक्षेप में इस प्रकार है :

- जब भरत ननिहाल से लौटकर अयोध्या आते हैं, तो उन्हें माता कैकेयी के षड्यंत्र, पिता दशरथ की मृत्यु और भाई राम के वन-गमन का समाचार मिलता है। वे अत्यंत दुखी और क्रोधित होते हैं।

- वे अपनी माता कैकेयी को धिक्कारते हैं और अयोध्या का राज्य स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं।
- भरत निश्चय करते हैं कि वे वन जाकर श्रीराम को मनाकर वापस लाएंगे और उन्हें ही राजसिंहासन सौंपेंगे।
- वे तीनों माताओं, गुरु वशिष्ठ, मंत्रियों और अयोध्या की प्रजा के साथ चित्रकूट के लिए प्रस्थान करते हैं, जहाँ श्रीराम निवास कर रहे थे।
- चित्रकूट में गंगा के तट पर राम और भरत का भाव-विभोर करने वाला मिलन होता है। दोनों भाई एक-दूसरे के गले लगकर रोते हैं।
- भरत श्रीराम से अयोध्या लौटकर राज करने का आग्रह करते हैं और स्वयं को ही सब अनर्थों का कारण बताते हैं।
- श्रीराम भरत को निर्दोष बताते हुए उन्हें धैर्य बँधाते हैं और पिता के वचन की रक्षा के लिए वन में ही रहने का अपना दृढ़ निश्चय दोहराते हैं।
- अंत में, जब श्रीराम किसी भी तरह लौटने को तैयार नहीं होते, तो भरत उनकी चरण-पादुकाओं (खड़ाऊँ) को लेकर अयोध्या लौटते हैं और उन्हें सिंहासन पर रखकर एक सेवक की भाँति चौदह वर्षों तक राज्य का संचालन करते हैं।

#### Quick Tip

'राम-भरत-मिलन' का कथानक लिखते समय, भरत के त्याग और श्रीराम की पितृ-भक्ति, इन दो केंद्रीय भावों पर ध्यान केंद्रित करें। चरण-पादुकाओं वाले प्रसंग का उल्लेख करना अनिवार्य है क्योंकि यह भरत के महान त्याग का प्रतीक है।

25(ज)(ii). 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर 'कैकेयी' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

#### Solution:

'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य में कैकेयी का चरित्र एक ऐसी माँ का है जो परिस्थितियों के कारण गलती कर बैठती है, किन्तु बाद में उसके लिए गहरा पश्चाताप करती है। उनके चरित्र में एक स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देता है। उनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **प्रारंभ में सरल और स्नेहमयी :** प्रारम्भ में कैकेयी सरल स्वभाव की थीं और श्रीराम को अपने पुत्र भरत से भी अधिक स्नेह करती थीं। वे ही श्रीराम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर सबसे अधिक प्रसन्न हुई थीं।
- **कुचक्र का शिकार :** वे अपनी दासी मंथरा के कुचक्र और बहकावे में आ जाती हैं। मंथरा उनके मन में ईर्ष्या और असुरक्षा का बीज बो देती है, जिससे उनकी मति भ्रष्ट हो जाती है।
- **अदूरदर्शी और हठी :** मंथरा के बहकावे में आकर वे बिना सोचे-समझे राजा दशरथ से अपने दो वरदान माँग लेती हैं। वे अपने हठ पर अड़ी रहती हैं और इसके भयानक परिणामों का अनुमान नहीं लगा पातीं।

- **पश्चाताप की अग्नि में दग्ध :** जब उनके हठ के कारण पति दशरथ की मृत्यु हो जाती है और उनका अपना पुत्र भरत उन्हें धिक्कारता है, तब उन्हें अपनी भूल का अहसास होता है। वे पश्चाताप की आग में जलने लगती हैं। चित्रकूट में श्रीराम के समक्ष वे अपने अपराध को स्वीकार करती हैं और क्षमा माँंगती हैं।
- **चरित्र का उन्नयन :** पश्चाताप के आँसुओं से उनका कलंक धुल जाता है और श्रीराम उन्हें क्षमा कर देते हैं। अंत में उनका चरित्र एक भूली-भटकी किन्तु पश्चाताप करने वाली माँ के रूप में उभरता है, जिससे पाठक की सहानुभूति उन्हें प्राप्त होती है।

### Quick Tip

कैकेयी का चरित्र-चित्रण करते समय, उनके चरित्र-परिवर्तन पर विशेष ध्यान दें। यह दिखाएँ कि वे मूलतः बुरी नहीं थीं, बल्कि मंथरा के बहकावे में आकर उन्होंने गलती की और बाद में उसके लिए सच्चा पश्चाताप किया।

25(अ)(i). 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए।

### Solution:

श्री देवी प्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का कथानक किसी एक कहानी पर आधारित नहीं है, बल्कि यह भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के विराट व्यक्तित्व का काव्यात्मक वर्णन है। कवि ने उन्हें एक 'लोकनायक' और भारत के भाग्य-विधाता के रूप में प्रस्तुत किया है। इसका कथानक संक्षेप में इस प्रकार है :

- खण्डकाव्य का आरम्भ उस समय से होता है जब भारत स्वतंत्र हो चुका है और उसके नवनिर्माण का उत्तरदायित्व पं. नेहरू के कंधों पर है।
- कवि ने नेहरू जी को एक दिव्य पुरुष के रूप में चित्रित किया है, जिसके निर्माण में सम्पूर्ण भारत का योगदान है। भारत के विभिन्न प्रदेश, नदियाँ, पर्वत और महापुरुष अपने-अपने गुण नेहरू जी को प्रदान करते हैं।
- राजस्थान उन्हें अपना शौर्य और त्याग देता है, महाराष्ट्र शिवाजी की वीरता देता है, तो दक्षिण भारत उन्हें अपनी कला और दर्शन प्रदान करता है। गंगा-यमुना उन्हें अपनी पवित्रता और गहराई देती हैं।
- इसमें नेहरू जी के जीवन के संघर्ष, उनके स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान, उनके जेल-जीवन और भारत की खोज का वर्णन है।
- खण्डकाव्य में नेहरू जी की राष्ट्रीय (पंचवर्षीय योजनाएँ, औद्योगीकरण) और अंतर्राष्ट्रीय (गु-टनिरपेक्षता, पंचशील) नीतियों का भी उल्लेख है।
- अंततः, कवि नेहरू जी को एक ऐसे 'ज्योति पुंज' के रूप में स्थापित करता है जो भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य को अपने प्रकाश से आलोकित करता है। वे ही 'ज्योति जवाहर' हैं।

इस प्रकार, इसका कथानक घटना-प्रधान न होकर भाव-प्रधान और चरित्र-प्रधान है।

### Quick Tip

'ज्योति जवाहर' का कथानक लिखते समय यह स्पष्ट करें कि यह एक पारंपरिक कथाकाव्य नहीं, बल्कि एक नायक के व्यक्तित्व का प्रतीकात्मक और काव्यात्मक विश्लेषण है। इसमें घटनाओं से अधिक नेहरू जी के गुणों और विचारों को महत्व दिया गया है।

25(झ)(ii). 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

### Solution:

'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू हैं। कवि ने उन्हें एक युग-पुरुष और भारत के नवनिर्माता के रूप में चित्रित किया है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **अलौकिक एवं दिव्य पुरुष** : कवि ने नेहरू जी को एक साधारण मनुष्य न मानकर एक अलौकिक शक्ति से सम्पन्न दिव्य पुरुष माना है। उनका व्यक्तित्व हिमालय के समान ऊँचा और गंगा के समान पवित्र है।
- **समन्वयवादी व्यक्तित्व** : नेहरू जी के व्यक्तित्व में प्राचीन भारतीय संस्कृति और आधुनिक पाश्चात्य विचारों का अद्भुत समन्वय है। वे सत्य, अहिंसा जैसे गाँधीवादी मूल्यों के साथ-साथ वैज्ञानिक प्रगति के भी समर्थक हैं।
- **महान राष्ट्र-प्रेमी** : उनमें देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया और जीवन के अनेक वर्ष जेलों में बिताए।
- **विश्व-शांति के अग्रदूत** : नेहरू जी केवल भारत के ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के नेता थे। उन्होंने 'पंचशील' और 'गुटनिरपेक्षता' के सिद्धांतों के माध्यम से विश्व-शांति की स्थापना का प्रयास किया।
- **भारत के भाग्य-विधाता** : कवि उन्हें स्वतंत्र भारत का भाग्य-विधाता और निर्माता मानता है। वे ही भारत के अतीत की गौरव-गाथा और भविष्य के सुन्दर सपनों के प्रतीक हैं। वे भारत की आशाओं के केंद्र 'ज्योति जवाहर' हैं।

### Quick Tip

नेहरू जी का चरित्र-चित्रण करते समय, खण्डकाव्य के शीर्षक 'ज्योति जवाहर' की सार्थकता को उनके व्यक्तित्व से जोड़ें। बताएँ कि किस प्रकार वे भारत के लिए ज्ञान, प्रगति और आशा के 'प्रकाश' थे।

26(क). दिए गए लेखकों में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए :

(i) पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (iv) राम-धारी सिंह 'दिनकर'

**Solution:**

**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

- **जीवन-परिचय :** हिन्दी साहित्य के गौरव, युग-प्रवर्तक आलोचक, निबंधकार और साहित्य-इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म सन् 1884 ई. में बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. चंद्रबली शुक्ल था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा हमीरपुर में हुई और इन्होंने मिशन स्कूल से फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण की। गणित में कमजोर होने के कारण इनकी शिक्षा अधिक आगे नहीं बढ़ सकी। इन्होंने मिर्जापुर के पं. केदारनाथ पाठक एवं बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के संपर्क में आकर हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बांग्ला साहित्य का गहन अध्ययन किया। इन्होंने 'आनंद कादंबिनी' पत्रिका में लिखना प्रारम्भ किया। बाद में ये नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से जुड़ गए और 'हिन्दी शब्दसागर' के सहायक संपादक रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए और बाबू श्यामसुंदर दास के बाद हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष बने। सन् 1941 ई. में हृदय गति रुक जाने से इनका देहावसान हो गया।
- **साहित्यिक योगदान :** शुक्ल जी एक उत्कृष्ट निबंधकार, निष्पक्ष आलोचक, गंभीर विचारक और सफल साहित्य-इतिहासकार थे। इन्होंने हिन्दी साहित्य को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। आलोचना के क्षेत्र में इनका स्थान सर्वोपरि है। इनके निबंध विचार-प्रधान और गंभीर होते हैं।
- **प्रमुख रचना :** चिंतामणि (निबंध-संग्रह)। यह इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है, जिसमें भाव और मनोविकार संबंधी गंभीर निबंध संकलित हैं। इसके अतिरिक्त 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'रस मीमांसा', 'तिरवेणी' आदि इनकी अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

### Quick Tip

जीवन-परिचय लिखते समय, मुख्य बिन्दुओं जैसे- जन्म, स्थान, माता-पिता, शिक्षा, साहित्यिक योगदान, प्रमुख रचनाएँ और मृत्यु को क्रमबद्ध रूप से लिखें। प्रमुख रचना का नाम अलग से और स्पष्ट रूप से उल्लेख करना आवश्यक है।

26(ख). निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए :

(i) तुलसीदास (ii) मैथिलीशरण गुप्त (iii) सुमित्रानन्दन पन्त (iv) अशोक बाजपेयी

**Solution:**

**गोस्वामी तुलसीदास**

- **जीवन-परिचय :** हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि, लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई. (संवत् 1589 वि.) में बाँदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था। कुछ विद्वान इनका जन्म स्थान एटा जिले का सोरो नामक स्थान मानते हैं। इनके पिता का

नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। कहा जाता है कि अभुक्त मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण इनके माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया था। इनका बचपन अनेक कष्टों में बीता। इनके गुरु बाबा नरहरिदास थे, जिन्होंने इन्हें शिक्षा-दीक्षा दी। इनका विवाह रत्नावली नामक विदुषी कन्या से हुआ। कहते हैं कि अपनी पत्नी की फटकार से ही इनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और ये ईश्वर-भक्ति में लीन हो गए। इन्होंने अपना अधिकांश जीवन चित्रकूट, काशी और अयोध्या में बिताया। काशी के असी घाट पर सन् 1623 ई. (संवत् 1680 वि.) में इनका निधन हो गया।

- **साहित्यिक योगदान :** तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति, आदर्श, मर्यादा और समन्वय की भावना का प्रचार किया। इन्होंने अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में काव्य-रचना की। ये मानव-जीवन के कुशल पारखी थे। इन्हें 'लोकनायक' और 'हिन्दी का जातीय कवि' भी कहा जाता है।
- **प्रमुख रचना :** श्रीरामचरितमानस। यह इनका सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है, जो विश्व-साहित्य के प्रमुख ग्रंथों में गिना जाता है। इसकी भाषा अवधी है और यह भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त 'विनय-पत्रिका', 'कवितावली', 'गीतावली', 'दोहावली' आदि इनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

#### Quick Tip

किसी कवि का जीवन-परिचय लिखते समय, उनके काव्य की प्रमुख विशेषताओं (जैसे तुलसीदास की समन्वय भावना) और उनकी भाषा-शैली का उल्लेख अवश्य करें। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना का उल्लेख करना अनिवार्य है।

27. अपनी पाठ्य-पुस्तक में से कण्ठस्थ कोई एक श्लोक लिखिए जो इस प्रश्न-पत्र में न आया हो।

#### Solution:

माता गुरुतरा भूमेः, खात् पितोच्चतरस्तथा ।

मनः शीघ्रतरं वातात्, चिन्ता बहुतरी तृणात् ॥

#### Quick Tip

श्लोक लिखते समय शुद्धता का विशेष ध्यान रखें। हलन्त, विसर्ग और मात्राओं की गलती से अंक कट सकते हैं। ऐसा श्लोक चुनें जो सरल हो और जिसे आपने अच्छी तरह याद किया हो। यह भी सुनिश्चित कर लें कि वह श्लोक प्रश्न-पत्र में कहीं और न आया हो।

28. अपने मुहल्ले की नालियों की समुचित सफाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

**Solution:**

सेवा में,  
श्रीमान् स्वास्थ्य अधिकारी,  
नगर निगम,  
प्रयागराज (उ.प्र.)।

**विषय :** मुहल्ले की नालियों की समुचित सफाई हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हम अशोक नगर मुहल्ले के निवासी हैं। हम आपका ध्यान मुहल्ले में व्याप्त गंदगी और नालियों की दुर्दशा की ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

हमारे मुहल्ले की नालियों की सफाई हुए लगभग एक महीना हो गया है। नालियों में कूड़ा-करकट और प्लास्टिक की थैलियाँ भर जाने के कारण पानी का बहाव रुक गया है, जिससे गंदा पानी सड़कों पर फैल रहा है। इस गंदगी के कारण पूरे मुहल्ले में दुर्गंध फैल गई है और मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है, जिससे मलेरिया, डेंगू जैसी बीमारियों के फैलने का खतरा बना हुआ है।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया हमारे मुहल्ले की नालियों की तत्काल और समुचित सफाई करवाने की व्यवस्था करें, जिससे मुहल्ले के निवासियों को इस नारकीय स्थिति से मुक्ति मिल सके। आपकी इस कृपा के लिए हम सभी मुहल्लेवासी आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद !

भवदीय,

समस्त निवासीगण,  
अशोक नगर,  
प्रयागराज।

**दिनांक :** [परीक्षा की तिथि]

**Quick Tip**

प्रार्थना-पत्र लिखते समय प्रारूप (format) का विशेष ध्यान रखें। विषय को स्पष्ट रूप से लिखें। पत्र की भाषा विनम्र और शिष्ट होनी चाहिए। समस्या का स्पष्ट वर्णन करें और अंत में अनुरोध के साथ पत्र समाप्त करें।

29. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

(i) आरुणिः कः आसीत् ?

(ii) वीरः केन पूज्यते ?

(iii) चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अवदत् ?

(iv) मैत्री केन वर्धते ?

**Solution:**

(ii) वीरः केन पूज्यते ?

उत्तर : वीरः वीरिण पूज्यते ।

(iii) चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अवदत् ?

उत्तर : चन्द्रशेखरः स्वनाम 'आजाद' इति अवदत् ।

### Quick Tip

संस्कृत प्रश्नों का उत्तर देते समय, प्रश्नवाचक शब्द (जैसे- कः, केन, किम्) को पहचानें और उसके स्थान पर सही उत्तर शब्द रखकर वाक्य पूरा करें। उत्तर संक्षिप्त और सटीक होना चाहिए।

30. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

(i) आतंकवाद : कारण एवं निवारण

(ii) देश-प्रेम

(iii) विज्ञान : वरदान या अभिशाप

(iv) विद्यार्थी-जीवन में खेल का महत्त्व

**Solution:**

विज्ञान : वरदान या अभिशाप

- प्रस्तावना (परिचय): आज का युग विज्ञान का युग है। हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो विज्ञान से अछूता हो। सुबह जागने से लेकर रात को सोने तक हम विज्ञान द्वारा दिए गए साधनों का उपयोग करते हैं। विज्ञान ने मानव जीवन को अत्यंत सरल, सुखद और समृद्ध बना दिया है। इसने असम्भव को सम्भव कर दिखाया है। किन्तु हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार विज्ञान के लाभ हैं तो हानियाँ भी।
- विज्ञान वरदान के रूप में:
  - यातायात और संचार : विज्ञान ने बस, रेल, वायुयान जैसे साधनों से दूरियों को समाप्त कर दिया है। टेलीफोन, मोबाइल और इंटरनेट ने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है।
  - चिकित्सा : विज्ञान ने असाध्य रोगों जैसे- कैंसर, टी.बी. आदि का इलाज संभव बना दिया है। अंग प्रत्यारोपण और नई-नई दवाइयों ने मनुष्य को दीर्घायु बनाया है।
  - मनोरंजन : रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा और कंप्यूटर जैसे साधनों ने हमारे मनोरंजन के तरीकों को बदल दिया है।
  - कृषि और उद्योग : ट्रैक्टर, उर्वरक और उन्नत बीजों से कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है। बड़े-बड़े कारखानों से उत्पादन बढ़ा है और मानव-श्रम की बचत हुई है।

- **दैनिक जीवन :** बिजली, पंखा, कूलर, फ्रिज, गैस-चूल्हा आदि ने हमारे दैनिक जीवन को अत्यंत सुविधाजनक बना दिया है।
- **विज्ञान अभिशाप के रूप में:**
  - **विनाशकारी हथियार :** विज्ञान ने परमाणु बम, हाइड्रोजन बम और अन्य घातक हथियारों का निर्माण किया है, जो पल भर में सम्पूर्ण मानवता का विनाश कर सकते हैं। हिरोशिमा और नागासाकी का विध्वंस इसका ज्वलंत उदाहरण है।
  - **पर्यावरण प्रदूषण :** उद्योगों और वाहनों से निकलने वाले धुएँ और रसायनों ने वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण को खतरनाक स्तर तक बढ़ा दिया है, जिससे अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं।
  - **नैतिक पतन और बेरोजगारी :** मशीनों के अत्यधिक प्रयोग से बेरोजगारी बढ़ी है। इंटरनेट और टेलीविजन के दुष्प्रभावों ने युवा पीढ़ी के नैतिक पतन को बढ़ावा दिया है।
- **उपसंहार (निष्कर्ष):** वास्तव में, विज्ञान न तो वरदान है और न ही अभिशाप। यह केवल एक शक्ति है, जिसका उपयोग मानव के विवेक पर निर्भर करता है। यदि हम इसका उपयोग मानवता के कल्याण के लिए करें, तो यह वरदान है और यदि इसका उपयोग विनाश के लिए करें, तो यह अभिशाप बन जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम विज्ञान पर नियंत्रण रखें और इसका प्रयोग रचनात्मक कार्यों में करें, विनाशकारी कार्यों में नहीं।

#### Quick Tip

निबंध लिखते समय उसे प्रस्तावना, विषय-विस्तार और उपसंहार जैसे भागों में बाँटें। विषय-विस्तार में अलग-अलग पहलुओं के लिए अलग-अलग अनुच्छेद बनाएँ। विचारों को क्रमबद्ध और तार्किक रूप से प्रस्तुत करें। प्रभावशाली भाषा और उद्धरणों का प्रयोग निबंध को और भी आकर्षक बनाता है।